कारक-प्रकरण

प्रथमा

कर्त्ता—ने

पिछले पृष्ठों में हम लिख चुके हैं कि संज्ञाओं की सात विभक्तियाँ होती हैं। पीछे सर्वनामों एवं विशेषणों पर विचार करते समय हम लिख आये कि संज्ञा की भाँति विशेषण तथा सर्वनाम की भी सात विभक्तियाँ होती हैं।

इस प्रकरण में यह बताया जा रहा है कि क्रिया के सम्पादन में जिन शब्दों का उपयोग होता है उन्हें कारक कहते हैं। उदाहरणार्थ—'प्रयाग में महाराज हर्ष ने अपने हाथ से हजारों रुपये ब्राह्मणों को दान दिये?' इस वाक्य में दान क्रिया के सम्पादन के लिए जिन-जिन वस्तुओं का (शब्दों का) उपयोग हुआ है वे 'कारक' कहलायेंगी। दान की क्रिया किसी स्थान पर हो सकती है, यहाँ प्रयाग में हुई, अतः 'प्रयाग' कारक हुआ। इस क्रिया के करने वाले हर्ष थे, अतः हर्ष कारक हुए। यह क्रिया हाथ से सम्पादित हुई, अतः 'हाथ' कारक हुआ। रुपये दिये गये, अतः रुपये कारक हुए और ब्राह्मणों को दिये गये, अतः 'ब्राह्मण' कारक हुए। इस प्रकार क्रिया के सम्पादन के लिए छः सम्बन्ध स्थापित हुए—

क्रिया का करने वाला (सम्पादक)—कर्त्ता
क्रिया का कर्म—कर्म
क्रिया का सम्पादन जिसके द्वारा हो—करण
क्रिया जिसके लिए हो—सम्प्रदान
क्रिया जिससे दूर हो—अपादान
क्रिया जिस स्थान पर हो—अधिकरण

इस प्रकार कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, और अधिकरण ये छः कारक* हैं। इन्हीं कारकों के चिह्न विभक्तियाँ कहलाती हैं।

'कारक' वही कहलाता है जिसका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध हो। 'राम के पुत्र लव ने अश्वमेध के घोड़े को पकड़ा।' इस वाक्य में 'पकड़ने' की क्रिया लव और घोड़े से है, क्योंकि पकड़ने वाला 'लव' और पकड़ा जानेवाला 'घोड़ा' है; राम और अश्वमेध का 'पकड़ने' की क्रिया से कोई सम्बन्ध नहीं, अतः राम को और अश्वमेध को कारक नहीं कहेंगे। राम का सम्बन्ध लव से है और अश्वमेध का घोड़े से, किन्तु क्रिया के सम्पादन में इनका (राम का तथा अश्वमेध का) कोई उपयोग नहीं होता।

---

* कर्त्ता कर्म च करणं च सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

प्रथमा

प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे च प्रथमा ।२।३।४६। प्रथमा विभक्ति का उपयोग केवल शब्द का अर्थ बतलाने के लिए अथवा केवल लिङ्ग बतलाने के लिए अथवा परिमाण या वचन बतलाने के लिए होता है।

प्रातिपदिक का अर्थ है 'शब्द' और प्रत्येक शब्द का कुछ नियत अर्थ होता है, किन्तु संस्कृत वैयाकरण जब तक किसी शब्द में कोई प्रत्यय जोड़कर (सुप्तिङन्तं पदम्) न बना लें तब तक उसका कुछ अर्थ नहीं समझते। अतः जब किसी शब्द का कोई अर्थ निकालना हो तो उस शब्द में प्रथमा विभक्ति लगाते हैं। 'गोविन्द' का उच्चारण निरर्थक होगा, किन्तु यदि 'गोविन्दः' कहें तो 'गोविन्द' शब्द का अर्थ होगा। इसी कारण संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम में ही नहीं, अपितु अव्यय शब्दों तक में भी संस्कृत के विद्वान् प्रथमा लगाते हैं, जैसे—उच्चैः नीचैः आदि। यदि न लगावें तो उन अव्ययों का अर्थ न समझा जाय।

लिङ्ग का अर्थ ऐसे शब्दों से है जिनमें लिङ्ग नहीं होता (जैसे—उच्चैः नीचैः आदि अव्यय) और ऐसे शब्द जिनका लिङ्ग नियत है (जैसे वृक्षः पुल्लिङ्ग, फलम् नपुंसकलिङ्ग, या लता स्त्रीलिङ्ग) इनको छोड़कर शेष शब्दों के अर्थ और लिङ्ग दोनों प्रथमा विभक्त के द्वारा ही जाने जाते हैं। उदाहरणार्थ—तटः, तटी, तटम्—इन शब्दों में 'तटः' से ज्ञात होता है कि यह शब्द पुँल्लिङ्ग में है और इसका अर्थ 'किनारा' है।

केवल परिमाण, जैसे सेरो गोधूमः (एक सेर गेहूँ) यहाँ प्रथमा विभक्ति से सेर का नाप विदित होता है।

केवल वचन (संख्या) जैसे एकः, द्वौ, बहवः।

सम्बोधने च ।२।४।४७।

सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति का उपयोग होता है, जैसे—छात्राः (हे विद्यार्थियो), बालिकाः (हे लड़कियो) आदि।

कर्त्ता और क्रिया का समन्वय

जिस व्यक्ति या वस्तु के विषय में कुछ कहा जाता है उसे वाक्य का कर्त्ता कहते हैं और वह प्रथमा विभक्ति में रखा जाता है। क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्त्ता के अनुसार होता है, अर्थात् जिस पुरुष और वचन का कर्त्ता होगा उसी पुरुष और वचन की क्रिया भी होगी, जैसे—'अस्ति भारतवर्षे राष्ट्रपतिः श्रीराजेन्द्रप्रसादः' (भारतवर्ष में राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद हैं)। 'साधयामो वयम्' (हम लोग जाते हैं)।

वाक्य में जब दो या दो से अधिक कर्ता हों और वे 'च' (और) से जोड़ दिये जाते हैं तब क्रिया कर्त्ताओं के संयुक्त वचन के अनुसार होती है, यथा—तयोर्जग्रिहतुः पादान् राजा राज्ञी च मागधी। (राजा और मागधी रानी ने उनके पाँव पकड़े।)

जब अनेक संज्ञाएँ पृथक् पृथक् समझी जाती हैं या वे सब एक साथ मिलकर एक विचार विशेष की द्योतक होती हैं तब क्रिया एक वचन की होती है, यथा—न मां त्रातुं तातः प्रभवति न चाम्बा न भवती। (मुझे न तो मेरे पिता बचा सकते हैं और न मेरी माता और न आप ही)। पटुत्वं सत्यवादित्वं कथायोगेन बुध्यते (पटुता और सत्यवादिता वार्तालाप से ज्ञात होती है।)

कभी कभी क्रिया समीपतम कर्ता के अनुसार होती है और शेष कर्ताओं के साथ समझ लिये जाने के लिए छोड़ दी जाती है, यथा—अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये धर्मोऽपि जानाति नरस्य वृत्तम्)। (दिन और रात, दोनों गोधूलियाँ और धर्म भी मनुष्य के कार्य को जानते हैं।)

जब वाक्य में कर्तृपद अथवा या वा द्वारा जुड़े होते हैं तो एक वचन की क्रिया आती, यथा—गोपालः कृष्णः जगदीशो वा गच्छतु। (गोपाल या कृष्ण या जगदीश जायें)। (शिशुत्वं स्त्रैणं वा भवतु ननु वन्द्यासि जगतः) (तुम चाहे शिशु हो और स्त्री हो, किन्तु जगत् की वन्दनीय हो।)

जब कर्त्ता भिन्न भिन्न वचन के कर्तृपदों से युक्त होता है तब क्रिया निकटतम कर्तृपद के अनुसार होती है, जैसे—ते वा अयं वा पारितोषिकं गृह्णातु (चाहे वे लोग चाहे यह व्यक्ति इनाम ले)।

जब भिन्न भिन्न पुरुषों के दो या दो से अधिक कर्तृपद 'च' (और) द्वारा जुड़े होते हैं तब क्रिया उनके संयुक्त वचन के अनुसार होती है, तथा उत्तम, मध्यम तथा प्रथम पुरुष के योग में उत्तमपुरुष की क्रिया होती है और मध्यम तथा प्रथम पुरुष के योग में मध्यम पुरुष की क्रिया होती है, यथा—

ते किङ्कराः अहञ्च श्वो ग्रामं प्रतिष्ठेमहि) (वे नौकर और मैं कल गांव को चल दूँगा।) (त्वञ्चाहञ्च पचावः—तू और मैं पकाता हूँ।) त्वञ्चैव सोमदत्तिश्च कर्णश्चैव तिष्ठत (तू और सोमदत्ति और कर्ण रहें)।

जब भिन्न २ पुरुषों के दो या दो से अधिक कर्तृपद 'वा' या 'अथवा' द्वारा जुड़े हों तब क्रिया का पुरुष और वचन निकटतम पद के अनुसार होता है यथा—स वा यूयं वा एतत्कर्म अकुरुत (उसने अथवा तुम लोगों ने यह काम किया है)।

ते वा वयं वा इदं दुष्कर्म कार्यं सम्पादयितुं शक्नुमः।

(या तो वे लोग या हम लोग इस कठिन कार्य को कर सकते हैं)

जब दो या दो से अधिक कर्तृपद किसी संज्ञा या सर्वनाम के समानाधिकरण होते हैं तब क्रिया संज्ञा अथवा सर्वनाम के अनुसार होती है, यथा—माता मित्रं पिता चेति स्वभावात् त्रयं हितम् (माता, मित्र और पिता ये तीनों स्वभाव से ही हितैषी होते हैं)।